दैनिक जागरण

बदलते समय और समाज को समझने में साहित्यिक रचनात्मकता की भूमिका अहम

जीबी पंत सामाजिक विज्ञान संस्थान में शुरू हुई साहित्यिक संगोष्ठी

संसू, जागरण, झूंसी : शहर, समय और संस्कृति का अपने-अपने मायनों में खास महत्व है। यह हमें काफी कुछ सिखाते हैं। साहित्यकार अपने लेखन में इसी को केंद्रित करते चलते हैं। साहित्यकार अमृत राय और विजय देवनारायण साही का समय और उनका चिंतन इस मामले में महत्वपूर्ण हो जाता है। इस पर साहित्यिक विचार विमर्श शनिवार से झूंसी स्थित गोविंद वल्लभ पंत सामाजिक विज्ञान संस्थान में शुरू हुआ। पहले तकनीकी सत्र में शहर में सिरजता समय व इतिहास में स्मृतियों पर चर्चा हुई।

संगोष्ठी में शामिल प्रो. बद्री नारायण, आलोक राय, माधव कौशिक व नंदकिशोर आचार्य • जागरण

आयोजन जीबी पंत सामाजिक विज्ञान संस्थान और साहित्य अकादमी नई दिल्ली ने मिलकर किया। पहले दिन के सत्र में जीबी पंत संस्थान के निदेशक प्रो. बद्री नारायण ने कहा कि हर शहर और समय की अपनी अवधारणा होती है। बदलते समय व समाज को समझने में शहर की साहित्यिक रचनात्मकता बहुत मददगार होती है। कोई भी शहर केवल भौतिक भू-भाग नहीं होता बल्कि वह वृत्तांतों और स्मृतियों से बनता है। कहा कि शहर प्रबुद्धजन, साहित्यकारों के विवेक और बौद्धिकता से बनता है। उसमें वहां की संस्कृति का समावेश रहता है। इस बात पर भी जोर दिया कि अमृत राय और देव नारायण साही के समय का शहर कैसा था इस पर बहस की जरूरत है। प्रसिद्ध गांधीवादी चिंतक, इतिहासकार प्रो. नंद किशोर आचार्य ने कहा कि अमृत राय और विजयदेव नारायण साही दोनों हिंदी साहित्य के शलाका पुरुष रहे हैं। अमृत राय हमें सिखाते हैं कि कैसे एक लेखक किसी विचारधारा से जुड़ते हुए भी अपनी स्वायत्तता बनाए रखता है। साही ने बदलते समय में मनुष्य को बार-बार परिभाषित किया। पश्चिमी रोमांटिजियम और भारतीय छायावाद में अंतर बताते हुए विजय देव नारायण साही का संदर्भ दिया कि किस तरह पश्चिमी विस्फोट होने पर शक्ति में नैतिकता का विलय हो जाता है। जबकि भारतीय छायावाद में नैतिकता में शक्ति का विलय हो जाता है। विशिष्ट अतिथि प्रो. आलोक राय ने कार्यक्रम के बहाने एक काल की स्मृति के पुनर्जीवित होने की व्याख्या की। अध्यक्षता करते हुए साहित्य अकादमी के अध्यक्ष माधव कौशिक ने कहा कि साहित्य को लिखने पढ़ने में सहमति व स्वायत्तता की बड़ी भूमिका है। कहा कि पहले हिंदुस्तान का कोई बड़ा कानून देखना होता था तो इलाहाबाद हाई कोर्ट का आदेश देख लिया जाता था। प्रो. चित्तरंजन मिश्र ने कहा कि इलाहाबाद एक वैचारिक खुलेपन का शहर है। इस शहर में ऐसे भी साहित्यकार हुए जो महात्मा गांधी पर भी टिप्पणी कर देते थे। साहित्यकार अमृत राय ने महात्मा गांधी के हिंदी भाषा के बारे में सीधे टिप्पणी की थी कि उन्हें हिंदी का अच्छा ज्ञान नहीं। जवाहरलाल नेहरू भी उनकी आलोचना से बच नहीं पाए थे। उस समय के साहित्यकारों में बेबाकी होती थी जो इसी शहर की देन थी। इस अवसर पर प्रो. प्रणय कृष्ण, प्रो. प्रदीप भार्गव, डा. रमाशंकर सहित व डा. अर्चना सिंह सहित शोध छात्र मौजूद रहे।

स्मृतियों को किया साझा : दूसरे सत्र में 'अमृत राय का घर, शहर और साहित्य लोक में' विषय पर आलोक राय ने स्मृतियों का साझा किया। तद्भव के संपादक अखिलेश ने अमृत राय के बारे में कहा कि उनका लेखन द्वंद्वों से उबर कर एकल दृष्टि बनाने की कोशिश है।